संवाद

बेटियाँ, शुभकामनाएँ हैं।
बेटियाँ, पावन दुआएँ हैं।
बेटियाँ, जीनत हदीसों की,
बेटियाँ, जातक कथाएँ हैं।
बेटियाँ, गुरु ग्रंथ की वाणी,
बेटियाँ, वैदिक ऋचाएँ हैं।
जिनमें खुद भगवान बसता है,
बेटियाँ, वे वंदनाएँ हैं।
त्याग, तप, गुण, धर्म, साहस की,
बेटियाँ, गौरव कथाएँ हैं।
मुस्करा के पीर पीती हैं,
बेटियाँ, हर्षित व्यथाएँ हैं।
लू-लपट को दूर करती हैं
बेटियाँ, जल की घटाएँ हैं।
इस प्रदूषण के ज़माने में,
बेटियाँ, सुरभित फिज़ाएँ हैं।
दुर्दिनों के दौर में देखा,
बेटियाँ, संवेदनाएँ हैं।

बहुत पहले अज़हर हाशमी की यह कविता 'दैनिक भास्कर' में पढ़ी थी। कविता ने मन को कहीं भीतर तक स्पर्श कर दिया था। कविता पढ़ने के बाद मन ही नहीं पलकें भी नम हो आईं थीं। बेटियाँ घर-परिवार ही नहीं समाज के लिए भी हमेशा से ही बहुत कुछ करती आई हैं। इतिहास गवाह है कि आज़ादी की लड़ाई में महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, लेकिन आज़ादी के इतने दशक बीतने के बाद आज भी हमारे समाज में बेटियों को वह दर्ज़ा हासिल नहीं है, जो कि बेटों को। भले ही हमारे देश की बालिकाओं ने, जब भी उन्हें अवसर मिला, ऊँचे-से-ऊँचे मुकाम को हासिल किया। लेकिन उन्हें अभी भी अपेक्षित स्थान नहीं मिला है। आज भी आए दिन समाचार-पत्र, टेलिविज़न के विभिन्न चैनल्स में भ्रूण हत्या, दहेज हत्या, यौन उत्पीड़न जैसी खबरें किसी भी संवेदनशील हृदय को झकझोर कर रख देती हैं। कारण स्पष्ट हैं कि आज भी बहुत से लोग लिंगजनित रुढ़िग्रस्त मानसिकता से ग्रस्त हैं। जब तक स्वस्थ मानसिक दृष्टिकोण विकसित नहीं होगा, तब तक समाज में बेटियाँ अजन्मी रहेंगी, जन्म ले भी लिया तो कदम-कदम पर दोगले व्यवहार की पीड़ा का सामना करती रहेंगी।

बचपन से ही लिंग आधारित स्वस्थ दृष्टिकोण के विकास में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इसी तथ्य को दृष्टि में रखते हुए हमारी पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों में लिंगजनित सार्थक दृष्टिकोण के विकास हेतु ज़रूरी सामग्री के विकास पर निरंतर बल दिया जा रहा है।

भले ही, कितनी ही विषयसामग्री का विकास हो जाए, शिक्षकों का रवैया सकारात्मक होना भी ज़रूरी है। शिक्षक का सकारात्मक दृष्टिकोण ही बच्चों में अपेक्षित बदलाव ला सकता है। शिक्षक ही है जो कक्षा के भीतर और बाहर विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से नन्हे बच्चों में लिंग आधारित समतावादी दृष्टिकोण के बीज अंकुरित कर सकता है। यह ज़रूरी है कि इस संबंध में हमारे सभी शिक्षक साथी अपनी ज़िम्मेदारी बखूबी समझें, क्योंकि जेंडर का मुद्दा समूची मानवता का मुद्दा है।

अकादमिक संपादक